धन्य-धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आए।
परमागम का मन्थन करके, शिवपुर पथ पर धाए।
माता दर्शन तेरा रे! भविक को आनन्द देता है,
हमारी नैया खेता है ॥१॥

वस्तु कथंचित् नित्य-अनित्य, अनेकांतमय शोभे।
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टयमय शोभे।
ऐसी वस्तु समझने से, चतुर्गति फेरा कटता है,
जगत का फेरा मिटता है ॥२॥

नय निश्चय-व्यवहार निरूपण, मोक्षमार्ग का करती।
वीतरागता ही मुक्ति पथ, शुभ व्यवहार उचरती।
माता तेरी सेवा से, मुक्ति का मारग खुलता है,
महा मिथ्यातम धुलता है ॥३॥

तेरे अंचल में चेतन की, दिव्य चेतना पाते।
तेरी अमृत लोरी क्या है, अनुभव की बरसातें।
माता तेरी वर्षा मे, निजानन्द झरना झरता है,
अनुपमानन्द उछलता है ॥४॥

नव-तत्त्वों में छुपी हुई, जो ज्योति उसे बतलाती।
चिदानन्द चैतन्यराज का, दर्शन सदा कराती।
माता तेरे दर्शन से, निजातम दर्शन होता है,
सम्यग्दर्शन होता है॥५॥